हिन्दी भाषा सम्मान

वर्ष 2018

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

अलंकरण समारोह

हिन्दी भाषा सम्मान
वर्ष 2018

राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच, गुड़गाँव

•

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान

प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल

•

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

श्री चन्द्रकान्त पाटील, पुणे

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग

मध्यप्रदेश शासन की संस्कृति नीति

प्रदेश में कलाओं की स्वतंत्रता और
सम्मान के साथ विकास के अवसरों और साधनों की वृद्धि

◆

प्रदेश की विशाल सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण

◆

आम नागरिकों के लिए कलाओं के रसास्वादन के अवसरों का विकास

◆

प्रदेश की आदिवासी और लोक संस्कृति के
प्रामाणिक संरक्षण के लिए विशेष प्रयत्न

◆

कला सम्बन्धी संस्थाओं का पुनर्गठन और
विस्तार तथा कलात्मक गतिविधियों का विकेन्द्रीकरण

◆

दुर्लभ होती जा रही शैलियों और रूपाकारों के लिए विशेष समर्थन.

◆◆◆

हिन्दी भाषा सम्मान

2018-19

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न क्षेत्रों में अमूल्य योगदान के लिए 5 सम्मान स्थापित किये गये हैं, जिनमें निम्न सम्मान शामिल हैं :-

1. सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
   (हिंदी साफ्टवेयर, सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजिटल भाषा, प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजिटल ऑडियो, विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान के लिए)
2. निर्मल वर्मा सम्मान
   (भारतीय अप्रवासी के विदेश में हिन्दी के विकास में अमूल्य योगदान के लिए)
3. फादर कामिल बुल्के सम्मान
   (विदेशी मूल के लोगों के हिन्दी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए)
4. गुणाकर मुले सम्मान
   (हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में योगदान के लिए)
5. हिन्दी सेवा सम्मान
   (अहिन्दी भाषी लेखकों को जिन्होंने अपने लेखन तथा सृजन से हिन्दी को समृद्ध किया हो)

उल्लेखित प्रत्येक सम्मान के अन्तर्गत सम्मानित लेखक, साहित्यकार, कलाकार को रुपये 1,00,000/- लाख की सम्मान राशि, प्रशस्ति पट्टिका, शॉल एवं श्रीफल प्रदान किया जाता है। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग प्रमुखतः देश के महत्वपूर्ण कलावन्तों, विशेषज्ञों, संस्थाओं और समाचार-पत्रों के माध्यम से उल्लेखित सम्मानों के लिए लेखकों, साहित्यकारों के नामांकन आमंत्रित करता है। उक्त नामांकन संकलित कर चयन समिति के सामने अन्तिम निर्णय के लिए रखे जाते हैं। चयन समिति में राष्ट्रीय ख्याति के लेखक, साहित्यकार, कलाकार, विशेषज्ञ एवं आलोचक शामिल होते हैं। राज्य शासन ने चयन समिति की अनुशंसा को अपने लिए बंधनकारी माना है।

अंकित सम्मान चयनित लेखक, साहित्यकार के उत्कृष्ट अवदान तथा जीवनपर्यन्त सृजन एवं वर्तमान सक्रियता के आधार पर प्रदान किया जाता है। यह सम्मान लेखक के समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। सम्मान के लिए चुने जाने के समय लेखक का सृजन सक्रिय होना अनिवार्य है।

वर्ष 2018 में राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान से डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच-गुड़गाँव को, राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान से सुश्री अर्चना पैन्यूली-डेनमार्क को, राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान से सुश्री आनी मान्तो-फ्रान्स को, राष्ट्रीय गुणाकर मूले सम्मान से प्रो. कपूरमल जैन-भोपाल को तथा राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान से श्री चन्द्रकान्त पाटील-पुणे को सम्मानित किये जाने का निर्णय लिया गया है।

राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान
वर्ष 2018

डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच, गुड़गाँव

विगत वर्षों के सम्मानित

1.	गूगल	2015
2.	माइक्रोसाफ्ट कार्पोरेशन प्रा.लि.	2016
3.	डॉ. अनुराग सीठा, भोपाल	2017

डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच

हिन्दी भाषा, तकनीक और पत्रकारिता में समान रूप से सहभागिता रखने वाले डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच का जन्म 15 फरवरी, 1966 को जयपुर में हुआ। उन्होंने विज्ञान, वाणिज्य और कला में स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की हैं। तकनीकी विषयों पर निरन्तर लेखन करते हुए उनको अनेक वर्ष हुए हैं। इसी के साथ उन्होंने सॉफ्टवेयरों का विकास करने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। हिन्दी तकनीकों का प्रशिक्षण देने वाली कार्यशालाओं में उनकी सर्वाधिक सहभागिता रही है।

डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच ने हिन्दी भाषीयों के तकनीकी सशक्तिकरण की दिशा में बहुपक्षीय प्रयास किये हैं। हिन्दी सॉफ्टवेयरों, वेब अनुप्रयोगों आदि का विकास, मुख्य धारा के समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं में तकनीकी विषयों पर विशेष लेखन, शैक्षणिक संस्थानों में तकनीकी लेखन, हिन्दी एवं मीडिया के विषयों पर कार्यक्रमों, व्याख्यानों और कार्यशालाओं में आपने निरन्तर भागीदारी कर इन माध्यमों में कार्य करने वालों का उपयोगी पथ-प्रदर्शन किया है।

अनेक प्रतिष्ठित समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं में कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी, तकनीकी बर्ताव को लेकर लम्बे समय स्तम्भकार के रूप में भी आपका लेखन उपयोगी रहा है। ब्लॉग, यू-ट्यूब चैनल, सायबर-शो, फेसबुक इत्यादि में निरन्तर अपने विषय से सम्बन्धित संवाद और मार्गदर्शन डॉ. दाधीच की विशेषता रही है। टेलीविजन के अनेक चैनलों के लिए भी आपने विशिष्ट कार्यक्रमों का निर्माण किया है।

हिन्दी समाचार पोर्टल 'प्रभासाक्षी डॉट कॉम', बारह भाषाओं में माइक्रोसॉफ्ट की तकनीकी वेबसाइट 'भाषा इण्डिया डॉट कॉम', यूनिकोड हिन्दी वर्ड प्रोसेसर, हिन्दी वर्ड प्रोसेसर माध्यम, दो तरफा हिन्दी फॉण्ट् परिवर्तक का विकास, चित्रों का त्वरित सम्पादन करने के लिए ड्रैग रिसाइज नामक सॉफ्टवेयर का निर्माण, हिन्दी ई-बुक प्रोत्साहन योजना 'ई-प्रकाशक डॉट कॉम' की मेन्टरिंग आदि आपकी महत्वपूर्ण सक्रियताएँ हैं। आपको राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान, ज्ञान प्रौद्योगिकी सम्मान, भाषादूत सम्मान, विश्व नागरिक सम्मान, अक्षरम आई.टी. सम्मान आदि भी प्राप्त हुए हैं।

मध्यप्रदेश शासन **डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच** को कम्प्यूटर तकनीक में हिन्दी भाषा व्यवहार और लिपि की सम्भावना की सहजता तथा रचनात्मक ज्ञान-पद्धति के साथ किये गये योगदान के लिए **राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान वर्ष 2018** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

2018

चयन समिति के सदस्यगण

राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

वर्ष 2018

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान वर्ष 2018 के लिए चयन समिति की बैठक दिनांक 20 अगस्त, 2019 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. डॉ. विजय अग्रवाल, भोपाल
2. डॉ. अनिल चौबे, रायपुर
3. डॉ. अनुराग सीठा, भोपाल

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों एवं नियमों और चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान हिन्दी सॉफ्टवेयर सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घसाधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय लेखक का सृजन सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान किसी एक अथवा विशिष्ट कृति के लिए न होकर समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के महत्वपूर्ण कलावन्तों, विशेषज्ञों, संस्थाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों के माध्यम से अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने लक्ष्य किया कि *डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच* ने हिन्दी भाषा के तकनीकी सशक्तिकरण की दिशा में बहुपक्षीय प्रयास किये है। हिन्दी से सम्बन्धित कई सॉफ्टवेयर का विकास, हिन्दी फॉण्ट्स का विकास, हिन्दी वेबसाइट एवं पोर्टल का विकास तथा सम्पादन, कम्प्यूटर और तकनीकों का हिन्दी में लेखन कार्य करते हुए सामान्यजन तक इसके व्यवहार की सहूलियत का उपक्रम किया है। अतएव समिति सर्वसम्मति से यह सम्मान डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच को प्रदान करने की अनुशंसा करती है।

(डॉ. विजय अग्रवाल) (डॉ. अनिल चौबे) (डॉ. अनुराग सीठा)

डॉ. विजय अग्रवाल

डॉ. विजय अग्रवाल का जन्म 20 जनवरी, 1956 में चन्द्रमेढ़ा (छत्तीसगढ़) में हुआ। आपने हिन्दी साहित्य में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। 1978 से 1983 तक शासकीय पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अम्बीकापुर में अध्यापन करने के उपरान्त अखिल भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में चयनित हुए तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों में विभिन्न पदों पर समय-समय पर नियुक्त रहे। वर्ष 1988 से 1997 तक तत्कालीन उपराष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के निजी सचिव के रूप में कार्य। इसके उपरान्त पत्र-सूचना कार्यालय, भोपाल में अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर कार्य करते हुए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। एक लेखक के रूप में साहित्य, भाषा, सिनेमा, संस्कृति एवं जीवन प्रबंधन आदि पर लगभग 100 पुस्तकों का प्रकाशन, दैनिक जागरण, एनडीटीवी एवं न्यूज-18 में स्तम्भ लेखन, विश्व के 40 देशों की यात्राएँ। भोपाल में निवास।

♦♦♦

डॉ. अनिल चौबे

डॉ. अनिल चौबे प्राध्यापक के रूप में लम्बे समय उच्च शिक्षा विभाग में सेवाएँ देते हुए सेवानिवृत्त हुए हैं। वे रायपुर में डिफेंस स्टडीज़ के संस्थापक प्रोफेसर रहे हैं। आपने 1972 से 1984 तक शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, रायपुर में अध्यापन किया, इसके पश्चात् भिण्ड, ग्वालियर, रीवा एवं भोपाल के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। प्रशासकीय सहभागिता के रूप में जीवाजी विश्वविद्यालय में छात्र कल्याण के डीन, संस्थापक रजिस्ट्रार नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट, भोपाल में 1998 से 2000 तक रहे, इसके पश्चात् माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के रूप में 2005 से 2008 तक कार्य किया। विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी के रूप में राज्य मंत्रालय, भोपाल तथा उसके पश्चात् इंडियन रेडक्रास सोसायटी के सचिव रहे। मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी में संयुक्त निदेशक के रूप में कार्य। सिनेमा तथा शिक्षा के विश्लेषण तथा व्याख्या को लेकर महती कार्य। सिनेमा के 105 वर्षों के इतिहास पर विभिन्न पक्षों के साथ दृश्य एवं उद्बोधन परक कार्यक्रमों का निर्माण एवं प्रदर्शन के कार्यों से जुड़े हैं। रायपुर में निवास।

♦♦♦

डॉ. अनुराग सीठा

वर्ष 1990–95 के दौरान डेस्क टॉप पब्लिशिंग में प्रयुक्त होने वाले हिंदी फॉण्ट्स का निर्माण। सामान्य पाठ्य संसाधक से प्रकाशन सॉफ्टवेयर जैसे वेंचुरा, प्रकाशक, हिंदी भाषा के कन्वर्टर का विकास। जन–सामान्य की सुविधा के वेब तथा क्लाइण्ट–सर्वर तकनीक, हिंदी भाषा में ई–प्रशासन से संबंधित सॉफ्टवेयर 'सूचना मित्र' का विकास, आइसेक्ट के साथ प्रयोग। देश में पहली बार मानक हिंदी यूनिकोड का प्रयोग, लिनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के हिंदी इंटरफेस का निर्माण, विजन डॉक्यूमेंट हिंदी–अंग्रेजी भाषा युग्म पर आधारित पहले क्रॉस लैंग्वेज इन्फॉरमेशन, रिट्रीवल सर्च इंजन का निर्माण एवं मानक टेस्ट कलेक्शन का निर्माण अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों के आधार पर किया। कम्प्यूटर तथा संबंधित विषयों पर स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा में 20 से अधिक पुस्तकें विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों के रूप में स्वीकृत हैं। पुस्तक जावा प्रोग्रामिंग को स्नातक स्तर के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत। भोपाल में निवास।

♦♦♦

राष्ट्रीय
गुणाकर मुले सम्मान

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान
वर्ष 2018

प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल

विगत वर्षों के सम्मानित

1.	डॉ. पुरुषोत्तम भट्ट चक्रवर्ती, भोपाल	2015
2.	श्री हरिमोहन, आगरा	2016
3.	डॉ. शिवचन्द्र दुबे, भोपाल	2017

प्रो. कपूरमल जैन

1 जुलाई, 1950 को नागदा, जिला-धार में जन्मे प्रो. जैन ने शासकीय महाविद्यालय, धार से बी.एस.सी. उत्तीर्ण करने के पश्चात् 'बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, पिलानी' से भौतिकी में एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् आपने सी.एस.आय.आर. के कनिष्ठ और वरिष्ठ शोध फैलो के रूप में नार्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, दार्जिलिंग में आणविक भौतिकी के क्षेत्र में अपना आरंभिक शोध-कार्य किया तथा फिर यू.जी.सी. के टीचर-फैलो के रूप में इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस, जादवपुर (कोलकाता) में कार्य करते हुए सन् 1981 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने यू.जी.सी. के नेशनल एसोसिएट के रूप में आय.आय.टी., नई दिल्ली में तथा यू.जी.सी. के विजिटिंग एसोसिएट के रूप में पूना विश्वविद्यालय, पुणे में भी अनुसंधान कार्य किया।

विभिन्न क्षेत्रों में प्रो. जैन के दो सौ पचास से अधिक शोध पत्र, लेख देश-विदेश के कई प्रतिष्ठित विज्ञान शोध जर्नलों तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अब तक 17 पुस्तकें लिखी हैं। विश्व प्रकृति निधि-भारत ने 'हरी राह', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने 'जिज्ञासाओं के गर्भ में वैज्ञानिक चेतना', 'प्रायोगिक भौतिकी' व 'महाविद्यालयीन भौतिकी', मध्यप्रदेश विज्ञान सभा ने 1905 में 'भौतिकी की क्रांति', साउथ एशियन पब्लिकेशन्स, दिल्ली ने 'बेसिक्स ऑफ थर्मल एण्ड स्टेटिस्टीकल फिजिक्स' व 'इंट्रोडक्टरी क्वांटम मेकेनिक्स एण्ड स्पेक्ट्रोस्कोपी' तथा आईसेक्ट ने मध्यप्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद् की अनुसृजन-परियोजना के अंतर्गत 'घर-घर में विज्ञान', 'भौतिकी की विकास यात्रा' तथा 'न्यूट्रिनो की दुनिया' नामक आपकी पुस्तकें प्रकाशित की है।

इनके अतिरिक्त पार्ट्रिज पब्लिशिंग कम्पनी ने आपकी पुस्तक 'थिंकिंग फिजिक्स दिस वे', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने भौतिकी के अन्वेषी, दृष्टा और सृष्टा तथा भौतिकविदों का जीवन परिचय और उनका योगदान एवं उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान ने 'इंट्रोडक्शन टू एनर्जी' भी प्रकाशित की हैं। वर्ष 2018 में उनकी एक और पुस्तक 'बनना एक वैज्ञानिक का' मालविका प्रकाशन, इलाहाबाद तथा वर्ष 2019 में हर्ष पब्लिकेशंस, दिल्ली द्वारा 'पर्सेनिलिटी स्पा' प्रकाशित हुई हैं। प्रो. जैन को उनके उपरोक्त महत्वपूर्ण अवदान के लिए समय-समय पर विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुए हैं। मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी ने आपको डॉ. शंकर दयाल शर्मा सृजन सम्मान से सम्मानित किया है।

मध्यप्रदेश शासन **प्रो. कपूरमल जैन** को वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन में हिन्दी भाषा के उपयोग के साथ पाठ्य पुस्तकों के निर्माण तथा जनोपयोगी पुस्तकों के लेखन के लिए **राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान वर्ष 2018** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान

2018

चयन समिति के सदस्यगण

राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान
वर्ष 2018
चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान वर्ष 2018 के लिए चयन समिति की बैठक दिनांक 21 अगस्त, 2019 को भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. डॉ. विजय बहादुर सिंह, भोपाल
2. श्री सुरेश गुप्ता, भोपाल
3. प्रो. लक्ष्मी शर्मा, जयपुर
4. श्री हेमन्त पाल, इन्दौर

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों एवं नियमों और चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य-पुस्तकों के लिए लेखन क्षेत्र में उत्कृष्ट सृजन के लिए स्थापित है तथा रचनात्मक उत्कृष्टता, असाधारण उपलब्धि तथा दीर्घसाधना के निरपवाद मानदण्डों के आधार पर दिया जाता है। सम्मान चयन के समय लेखक का सृजन सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान किसी एक अथवा विशिष्ट कृति/प्रस्तुति-प्रदर्शन के लिए न होकर समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के महत्वपूर्ण कलावन्तों, विशेषज्ञों, संस्थाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों के माध्यम से अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने लक्ष्य किया कि *प्रो. कपूरमल जैन* ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखन के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों के लेखन एवं पाठ्यक्रमों की अवधारणा के परिमार्जन को लेकर तीन दशक से भी अधिक समय से सृजन किया है। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जो सम्बन्धित विषयों को समकालीन सन्दर्भों में महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा एवं स्वीकार्यता देती हैं। प्रो. जैन आज भी सृजन-सक्रिय हैं। अतएव समिति सर्वसम्मति से वर्ष 2018 का राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल को प्रदान किये जाने की अनुशंसा करती है।

(डॉ. विजय बहादुर सिंह) (सुरेश गुप्ता) (प्रो. लक्ष्मी शर्मा) (हेमन्त पाल)

डॉ. विजयबहादुर सिंह

प्रसिद्ध आलोचक और कवि डॉ. विजयबहादुर सिंह (1940) ने अध्यापन कार्य के साथ-साथ महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों की सृष्टि, स्वतंत्र आलोचनात्मक ग्रंथ, वृहत्रयी (प्रसाद, निराला, पंत की कविता पर एकाग्र चिंतन) नागार्जुन का रचना संसार, जनकवि, नागार्जुन संवाद, कविता और संवेदना, उपन्यास : समय और संवेदना, आलोचक का स्वदेश आदि उनके बहुचर्चित आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। आलोचना की दुरूह बौद्धिकता से सम्बद्ध रहते हुए भी कविता के भावमय जगत में प्रवेश करने में आपको कोई कठिनाई नहीं हुई। मौसम की चिट्ठी, पतझड़ की बाँसुरी, पृथ्वी का प्रेमगीत, भीमबैठका, शब्द जिन्हें भूल गई भाषा काव्य संग्रह हैं। श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महाबौद्ध सम्मेलन (2001) द्वारा उनके लेखक और चिंतन की संस्तुष्टि की गई। मध्यप्रदेश जनवादी लेखक संघ के संस्थापक अध्यक्ष। साहित्य साधना सम्मान, लोक सम्मान, श्रेष्ठ कला सम्मान तथा डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान से विभूषित। भोपाल में निवास।

♦♦♦

सुरेश गुप्ता

एक लेखक एवं पत्रकार के रूप में कैरियर की शुरूआत। आरम्भ में नवभारत समाचार-पत्र, भोपाल में लम्बे समय रहकर कार्य किया। इसके उपरान्त जनसम्पर्क विभाग में सहायक संचालक के रूप में चयनित हुए। वहाँ पर विभिन्न पदों पर पदोन्नत होते हुए वर्तमान में अपर संचालक के पद पर कार्यरत हैं। सुदीर्घ सेवा अवधि में आपने मध्यप्रदेश संदेश पत्रिका का भी सम्पादन किया है। एक प्रखर लेखक एवं विचारक के रूप में श्री सुरेश गुप्ता की महत्वपूर्ण पहचान है। प्रेस अधिकारी के रूप में मुख्यमंत्री के अलावा मध्यप्रदेश शासन के विभिन्न मंत्रियों के साथ कार्य किया है। भोपाल में निवास।

♦♦♦

प्रो. लक्ष्मी शर्मा

डॉ. लक्ष्मी शर्मा का जन्म 2 फरवरी, 1959 में हुआ। आपने स्नातकोत्तर उपाधि, एम.फिल. तथा पीएच.डी. हिन्दी विषयों के साथ प्राप्त की। वर्ष 1994 से 2011 तक जयपुर में श्री खण्डेलवाल वैश्य महाविद्यालय में प्राध्यापक रहीं। स्नातकोत्तर अध्यापन का अनुभव लगभग 6 वर्ष प्राप्त किया। 2011 से 2019 तक शासकीय महाविद्यालय, मालपुरा में अध्यापन किया। कहानी और नाटक लेखन में आपको लम्बा अनुभव है। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। लगभग 15 शोधपत्र, एक सम्पादित तथा एक सन्दर्भ पुस्तक के अलावा एक उपन्यास, कहानियों का एक संकलन तथा एक कविता संग्रह का सम्पादन आपने किया है। लगभग 20 कहानी, नाटक एवं समालोचनात्मक आलेख उल्लेखनीय रूप से प्रकाशित हुए हैं। रेडियो एवं टेलीविजन के अनेक कार्यक्रमों का संयोजन एवं सहभागिता। जयपुर में रहती है।

♦♦♦

हेमन्त पाल

सागर विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक। फॉर्मेसी में डिप्लोमा। तीन दशक से ज्यादा समय से हिंदी पत्रकारिता और लेखन के क्षेत्र में कार्यरत। 1983 में मुम्बई से प्रकाशित 'करंट' के प्रतिनिधि के रूप में पत्रकारिता की शुरूआत। 1985 में 'नवभारत' (इंदौर) में बतौर उप-संपादक कार्य प्रारंभ। 1987 में 'नई दुनिया' (इंदौर) में नियुक्ति। इस दौरान के कई बड़े नेताओं से साक्षात्कार, विभिन्न विषयों पर लेखन। 1989 में 'जनसत्ता' (मुम्बई) में मुख्य उप-संपादक नियुक्त। जनसत्ता समूह के सभी संस्करणों के लिए फिल्म पेज का संपादन। 1993 में 'चेतना' (इंदौर) में मुख्य उप संपादक/फीचर संपादक पद पर कार्य। 'रंगोली' तथा 'घरबार' साप्ताहिक पत्रिकाओं का संपादन। 1995 में पुन: नई दुनिया, इंदौर में कार्य प्रारंभ। 2008 में नई दुनिया समूह का भोपाल में 'एसोसिएट एडीटर' नियुक्त। भोपाल में 'पॉलिटिकल एण्ड एडमिनिस्ट्रेटिव हेड' के रूप में कार्य। 2013 में 'सुबह सवेरे' (भोपाल) का राजनीतिक संपादक की जिम्मेदारी सम्भाली। फिलहाल 'सुबह सवेरे', इन्दौर का स्थानीय संपादक। कई वेबसाइट में नियमित स्तम्भकार। मध्यप्रदेश की राजनीति पर पुस्तक 'ढाई घर' प्रकाशाधीन। इन्दौर में निवास।

♦♦♦

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान
वर्ष 2018

श्री चन्द्रकान्त पाटील, पुणे

विगत वर्षों के सम्मानित

1.	प्रो. एस. शेषारत्नम, विशाखापट्टनम	2015
2.	प्रो. ओकेन लेगो, ईटानगर	2016
3.	डॉ. छबिल कुमार मेहेर, सागर	2017

चन्द्रकान्त पाटील

18 अक्टूबर, 1943 को अम्बेजोगाई (महाराष्ट्र) में जन्मे सुविख्यात कवि श्री चन्द्रकान्त पाटील की पहचान एक आलोचक, अनुवादक, सम्पादक एवं स्तम्भ लेखक के रूप में भी व्यापक है। वे 1960 से मराठी तथा 1973 से हिन्दी में लेखन कर रहे हैं। श्री पाटील ने अंग्रेजी में समीक्षा लेखन का कार्य भी किया है।

60-70 के दशक में मराठी में उभरे लघु-पत्रिकाओं के आन्दोलन में श्री चन्द्रकान्त पाटील की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। आपने भालचन्द्र नेमाड़े और ना.धो.महानोर के साथ बहुचर्चित लघु-पत्रिका 'वाचा' का सम्पादन 1968 में प्रारम्भ किया एवं वाचा प्रकाशन की स्थापना भी की। इसके माध्यम से भालचन्द्र नेमाड़े, सतीश कालसेकर, वसन्त दत्तात्रेय गुर्जर, तुलसी परब एवं दिलीप पुरुषोत्तम चित्रे के कविता संकलन का प्रकाशन हुआ। आपने कुछ वर्षों बाद तुला प्रकाशन के नाम से अव्यावसायिक प्रकाशन की शुरूआत की, जिसके तहत् सुश्री अनुराधा पाटील का कविता संकलन 'वालूच्या पात्रात मांडलेला खेल', श्री श्रीधर नांदेडकर का 'सूफी प्रार्थनांच्या किनार्यावरून' तथा सुश्री कविता महाजन का 'तत्पुरुष' प्रकाशित हुये हैं।

श्री चन्द्रकान्त पाटील की अब तक लगभग 55 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई है, इसमें 40 मराठी तथा 15 पुस्तकें हिन्दी में शामिल हैं। आपने अनेक प्रतिष्ठित कवियों की कविताओं का अनुवाद भी करके उनके प्रकाशन पुस्तकाकार प्रकाशित किये, जिनमें सर्वश्री विष्णु खरे, चन्द्रकान्त देवताले, श्रीकांत वर्मा, अशोक वाजपेयी, मणि मधुकर आदि शामिल हैं। आपने अब तक लगभग 1500 हिन्दी, मराठी तथा विश्व की कविताओं का अनुवाद किया है। श्री पाटील की प्रतिष्ठा हिन्दी और मराठी के दो तरफा अनुवादक के रूप में होती है। अनेक महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के अतिथि सम्पादक भी रहे हैं जिसमें प्रगतिशील वसुधा, साक्षात्कार, जमीन, आवेग एवं पूर्वग्रह के दिलीप चित्रे के अंक का सम्पादन शामिल हैं। आपको अब तक 17 से अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें भारत भवन की अनुवाद फैलोशिप, साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी सम्मान, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का विशेष सम्मान शामिल है।

मध्यप्रदेश शासन **श्री चन्द्रकान्त पाटील** को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी भाषा लेखक के रूप में सुदीर्घ साधना, निरन्तर सृजन एवं श्रेष्ठ प्रतिमानों के लिए **राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान वर्ष 2018** से सादर विभूषित करता है।

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

2018

चयन समिति के सदस्यगण

राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

वर्ष 2018

चयन समिति का प्रतिवेदन

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान वर्ष 2018 के लिए चयन समिति की बैठक दिनांक 24 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। बैठक में नीचे उल्लेखित सदस्य उपस्थित हुए :-

1. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, नई दिल्ली
2. प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी, वाराणसी
3. श्री मंगलेश डबराल, नई दिल्ली
4. श्री पुष्पेन्द्र पाल सिंह, भोपाल

समिति के सदस्य चयन के मानदण्डों एवं नियमों और चयन के लिए अनुशंसाएँ प्राप्त करने की प्रक्रिया से अवगत हुए। चयन समिति को अवगत कराया गया कि यह सम्मान 'उन अहिन्दी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को जिन्होंने अपने लेखन तथा सृजन से हिन्दी को समृद्ध किया हो, उन्हें हिन्दी सेवा सम्मान प्रदान किया जायेगा।' सम्मान चयन के समय साहित्यकार/लेखक का सृजन सक्रिय होना अनिवार्य है। यह सम्मान किसी एक अथवा विशिष्ट कृति/प्रस्तुति-प्रदर्शन के लिए न होकर समग्र रचनात्मक अवदान के लिए देय है। संस्कृति विभाग ने इस सम्मान के लिए देश के महत्वपूर्ण कलावन्तों, विशेषज्ञों, संस्थाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित विज्ञापनों के माध्यम से अनुशंसाएँ आमंत्रित की थीं। सम्मान हेतु प्राप्त अनुशंसाओं को चयन समिति के समक्ष रखा गया। चयन समिति ने प्राप्त अनुशंसाओं की समीक्षा की।

चयन समिति ने कवि, आलोचक और अनुवादक श्री चन्द्रकान्त पाटील की उक्त पुरस्कार के लिए अनुशंसा की। श्री पाटील लम्बे समय से हिंदी और मराठी के बीच एवं सुदृढ़ पुल की तरह काम करते रहे हैं। उनके अनुवादों के कारण हिंदी और मराठी के बीच निरंतर आवाही बढ़ी है। उन्होंने समकालीन हिंदी कविता के बेहद सुंदर अनुवाद किए हैं। मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'अंधेरे में' का उनका मराठी अनुवाद और उस पर लम्बा आलोचनात्मक आलेख उनका उल्लेखनीय योगदान है। उनके हिंदी में कई कविता संग्रह और आलोचनात्मक लेख चर्चित और प्रशंसित रहे हैं।

(ब्रजेन्द्र त्रिपाठी) (प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी) (मंगलेश डबराल) (पुष्पेन्द्र पाल सिंह)

ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

3 अक्टूबर 1955 को गोरखपुर (उत्तरप्रदेश) के एक गाँव में जन्मे श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कीं। एक लेखक एवं कवि के रूप में आपकी महत्वपूर्ण पहचान है। अब तक आपके कविता संग्रह तलाश, बालकृति हमारे राष्ट्रपति, निबंध संग्रह–साहित्य और परिवेश, दो कविता संकलनों में कविताएँ संकलित होकर प्रकाशित हुई हैं। आपने गुजराती कवि श्री जयन्त पाठक के कविता संग्रह का हिन्दी अनुवाद भी किया जो साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुआ। एक सिंधी उपन्यास ऐसे भी (परम अबीचंदानी) का भी आपने अनुवाद किया है। सम्पादित कृतियों में मलय की माटी में हिंदी का बिरवा, स्वप्न और संकल्प, महादेवी वर्मा अभिनंदन स्मारिका, पं. विद्यानिवास मिश्र अभिनंदन स्मारिका, वेदार्थ मंजरी शामिल हैं। आपने साहित्य अमृत, अनुवाद, समकालीन भारतीय साहित्य, समकालीन भोजपुरी साहित्य एवं ग्रामोत्थान संवाद में सम्पादकीय सहयोगी के रूप में कार्य किया है। वर्तमान में हिन्दी की द्वैमाषिक पत्रिका समकालीन भारतीय साहित्य के अतिथि सम्पादक के रूप में कार्यरत हैं जो साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जाती है। दिल्ली में निवास।

प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी

प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी का जन्म 5 जून, 1954 में हुआ। आपने 1975 में हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी तथा द्वितीय स्थान के साथ प्राप्त किया। 1977 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आधुनिक एवं लोक साहित्य में निरन्तर गहरे अध्ययन एवं लेखन के माध्यम से आपने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। आपने लगभग 40 वर्ष अध्यापन कार्य किया है और हाल ही में सेवानिवृत्त हुई हैं। महिला महाविद्यालय (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) के प्राचार्य पद का भी दायित्व सेवानिवृत्ति के पूर्व निर्वहन किया है। आपके सान्निध्य में अब तक 30 विद्यार्थियों ने पीएच.डी. प्राप्त की हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में अज्ञेय और नयी कविता, बसंत के चुपचाप गुजर जाने पर, शायद किसी दिन और इस मोड़ पर प्रमुख हैं। अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों कबीर साहब की समकालीनता, उपकी जन्नत की हकीकत, एक टुकड़ा कस्तूरी, स्त्री के पक्ष में : भाषा और सम्वेदना और गौरा गुणवंती में आपने उल्लेखनीय पाठ लिखे हैं। अब तक आपके 70 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक सेमीनारों में आपने सहभागिता की है तथा स्वयं भी संयोजित किये हैं। वाराणसी में निवास।

♦♦♦

मंगलेश डबराल

जन्म 16 मई, 1948 को काफलपानी, जिला–टिहरी (उत्तराखण्ड)में। जनसत्ता सहित विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लंबे समय तक काम करने के बाद वे तीन वर्ष नेशनल बुक ट्रस्ट के सलाहकार रहे। आपके 5 कविता संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'हम जो देखते हैं', 'आवाज भी एक जगह है', 'नये युग में शत्रु', चार यात्राओं और समीक्षात्मक गद्य के संग्रह 'एक सड़क एक जगह', 'एक बार आयोवा', 'लेखक की रोटी' और 'कवि का अकेलापन', एक सम्पादित पुस्तक 'सबद : विश्व कविता' और साक्षात्कारों का एक संकलन 'उपकथन' प्रकाशित हैं। अनेक विदेशी कवियों की रचनाओं के अलावा अंग्रेजी की प्रसिद्ध लेखिका अरुंधति रॉय के उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'अपार खुशी का घराना' शीर्षक से किया है। नागार्जुन, निर्मल वर्मा, महाश्वेता देवी, उ.र. अनन्तमूर्ति, गुरुदयाल सिंह और कुर्रतुल ऐन हैदर पर वृत्तचित्रों के लिए पटकथा लेखन। समाज, संगीत, सिनेमा और कला पर समीक्षात्मक लेखन कार्य। कई भारतीय और विदेशी भाषाओं के संकलनों और पत्र–पत्रिकाओं में आपके कविता अनुवाद का प्रकाशन। प्रतिष्ठित मान–सम्मान प्राप्त जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार, पहल सम्मान, कुमार विकल स्मृति सम्मान इत्यादि शामिल। दिल्ली में निवास।

♦♦♦

पुष्पेन्द्र पाल सिंह

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से पत्रकारिता में स्नातक और समाज शास्त्र एवं प्राणी विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि। बनारस हिंदू से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर उपाधि। कॉलेज ऑफ कम्युनिकेशन, फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. में मीडिया अध्ययन एवं डिजिटल जर्नलिज्म पाठ्यक्रम के लिए अमेरिकी सरकार द्वारा आमंत्रित। पत्रकारिता, मीडिया अध्ययन एवं जनसम्पर्क के क्षेत्र में 28 वर्षों का अनुभव, जिसमें वर्ष 2003 से वर्ष 2015 तक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य। पर्यावरण संचार पाठ्यक्रम के समन्वयक। चीन, इण्डोनेशिया और अन्य देशों की मीडिया संबंधी यात्राएँ, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलनों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में सहभागिता। विभिन्न मान-सम्मानों से सम्मानित। वर्ष 2018 के लिए पब्लिक रिलेशंस सोसायटी ऑफ इण्डिया के नेशनल अवार्ड्स में 'बेस्ट चेप्टर चेयरमेन' अवार्ड प्राप्त। पर्यटन लेखन, जनसम्पर्क बदलते आयाम एवं देश, समाज और गांधी नामक पुस्तकों का संपादन और प्रतिष्ठित समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में नियमित रूप से लेखों का प्रकाशन। वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन के उपक्रम 'मध्यप्रदेश माध्यम' में प्रधान सम्पादक एवं मध्यप्रदेश सरकार के साप्ताहिक समाचार-पत्र 'रोजगार और निर्माण' के संपादक के रूप में कार्यरत और पब्लिक रिलेशंस सोसायटी, भोपाल के चेयरमेन।

संस्कृति के क्षेत्र में
मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित राष्ट्रीय सम्मान

क्र.	सम्मान	विधा	राशि
1.	महात्मा गांधी सम्मान	गांधी विचार दर्शन (संस्था हेतु)	10.00 लाख
2.	कबीर सम्मान	भारतीय भाषाओं की कविता के लिए	3.00 लाख
3.	कालिदास सम्मान	शास्त्रीय संगीत	2.00 लाख
4.	कालिदास सम्मान	शास्त्रीय नृत्य	2.00 लाख
5.	कालिदास सम्मान	रंगकर्म	2.00 लाख
6.	कालिदास सम्मान	रूपंकर कलाएँ	2.00 लाख
7.	मैथिलीशरण गुप्त सम्मान	हिन्दी साहित्य	2.00 लाख
8.	किशोर कुमार सम्मान (फिल्म)	अभिनय	2.00 लाख
9.	तानसेन सम्मान	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत	2.00 लाख
10.	लता मंगेशकर सम्मान (फिल्म)	संगीत निर्देशन	2.00 लाख
11.	इकबाल सम्मान	उर्दू साहित्य	2.00 लाख
12.	देवी अहिल्या सम्मान (महिला)	लोक एवं आदिवासी पारंपरिक कलाओं के लिए	2.00 लाख
13.	तुलसी सम्मान (पुरुष)	लोक एवं आदिवासी पारंपरिक कलाओं के क्षेत्र में प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए	2.00 लाख
14.	शरद जोशी सम्मान	हिन्दी व्यंग्य, ललित निबंध, संस्मरण रिपोर्ताज, डायरी, पत्र लेखन आदि	2.00 लाख
15.	नानाजी देशमुख सम्मान	सामाजिक, सांस्कृतिक समरसता, उत्थान, परिष्कार, आध्यात्म, परंपरा, समाज एवं विकास तथा संस्कृति की मूल अवधारणा के प्रति कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था	2.00 लाख
16.	कवि प्रदीप सम्मान	मंचीय कविता के क्षेत्र में	2.00 लाख
17.	कुमार गंधर्व सम्मान	शास्त्रीय नृत्य (आयु समूह 24 से 45 वर्ष)	1.25 लाख
18.	राजा मानसिंह तोमर सम्मान	संगीत, संस्कृति एवं कला संरक्षण में कार्य करने वाली संस्था के लिए	1.00 लाख
19.	सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान	हिन्दी सॉफ्टवेयर सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान।	1.00 लाख
20.	निर्मल वर्मा सम्मान	भारतीय अप्रवासी होकर विदेश में हिंदी के विकास में अमूल्य योगदान।	1.00 लाख
21.	फादर कामिल बुल्के सम्मान	विदेशी मूल के व्यक्ति के हिंदी भाषा एवं उसकी बोलियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान।	1.00 लाख
22.	गुणाकर मुले सम्मान	हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन एवं पाठ्य-पुस्तकों के लिए लेखन।	1.00 लाख
23.	हिन्दी सेवा सम्मान	अहिंदी भाषी लेखकों और साहित्यकारों को लेखन-सृजन से हिंदी की समृद्धि के लिए योगदान।	1.00 लाख

संस्कृति के क्षेत्र में
मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित राज्य शिखर सम्मान

क्र.	सम्मान	विधा	राशि
1.	शिखर सम्मान	हिन्दी साहित्य	1.00 लाख
2.	शिखर सम्मान	उर्दू साहित्य	1.00 लाख
3.	शिखर सम्मान	संस्कृत साहित्य	1.00 लाख
4.	शिखर सम्मान	शास्त्रीय नृत्य	1.00 लाख
5.	शिखर सम्मान	शास्त्रीय संगीत	1.00 लाख
6.	शिखर सम्मान	रूपंकर कलाएँ	1.00 लाख
7.	शिखर सम्मान	नाटक	1.00 लाख
8.	शिखर सम्मान	आदिवासी एवं लोक कलाएँ	1.00 लाख
9.	शिखर सम्मान	दुर्लभ वाद्य वादन	1.00 लाख

हिन्दी भाषा सम्मान वर्ष 2018

डॉ. बालेन्दु शर्मा दाधीच, गुड़गाँव
राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

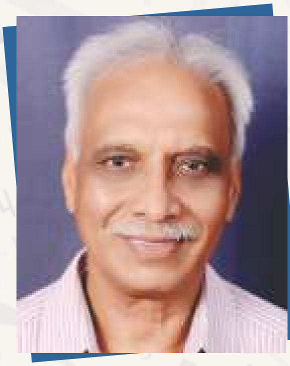

प्रो. कपूरमल जैन, भोपाल
राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मान

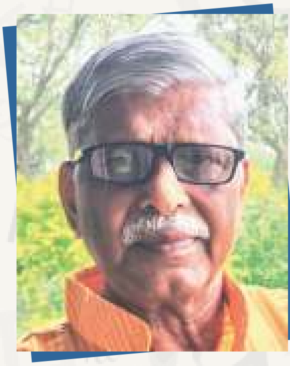

श्री चन्द्रकान्त पाटील, पुणे
राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान

प्रकाशक

संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश

1, शिवाजी नगर (रेडक्रास अस्पताल के पीछे), भोपाल - 462016

दूरभाष : 0755-2770597, 2770598

वेबसाइट : www.culturemp.in ईमेल : directorculture@rediffmail.com